मेरे मन का फूल

मेराज रज़ा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

मेरे मन का फूल

(बाल कविता संग्रह)

मेराज रज़ा

प्रस्तुति

हिंदी बाल साहित्य शोध संस्थान

बनौली, दरभंगा

बिहार–847428

प्रकाशन सहयोग

अगेही प्रकाशन

इंडिका इन्फोमीडिया

जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

Scanned with CamScanner

ISBN : 978-81-89450-72-4

कृति
मेरे मन का फूल
कृतिकार
मेराज रज़ा
© : लेखक

प्रस्तुति
हिंदी बाल साहित्य शोध संस्थान
बनौली, दरभंगा–847428

प्रकाशन सहयोग
अगेही प्रकाशन
'त्रिध्वन्या', शुभंकरपुर, दरभंगा–846006

प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
डब्ल्यू.जेड. 322, जेल रोड, नांगल राया, नई दिल्ली–110046
मोबा. : 09350951555; ई-मेल : indicainfo@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2020
मूल्य : ₹ 75/- (पचहत्तर रुपये)

आवरण-चित्र
हुसैन जामिन

अक्षर-संयोजन
साहेब कुमार ठाकुर

मुद्रक
आर. प्रिंट हाउस, हरिनगर, नई दिल्ली–110064

Mere man Ka Phool: A Book of Poems in Hindi *by* Meraj Raza
Price: ₹ 75/-

Scanned with CamScanner

समर्पण

बाल साहित्य के मर्मज्ञ
डॉ. सतीश चंद्र भगत
को
सादर समर्पित

मेराज रज़ा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

कुछ कहना है आपसे	*सात*
सुनो पेड़ जी	1
नाम बताओ	2
जाना-पहचाना हूँ	3
बिटिया लगे परी	4
मेरे मन का फूल	5
कभी-कभी जब....	6
उत्तर दे दो	7
पतंगों से प्यार	8
खुशबू मीठी-मीठी	9
जादू की पुड़िया	10
लार चू पड़ी	11
सुनो, सुनहरी बत्ती वाले	12
नाम बताकर समझो	13
सर्दी की धूप	14
बंदर को जुकाम	15
उजाला लाऊँ	16
नभ का तारा	17

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कुछ कहना है आपसे

प्यारे बच्चो,

बाल कविताओं का यह प्यारा-सा गुलदस्ता आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस छोटे-से गुलदस्ते में आपके लिए प्यारी-प्यारी कविताएँ संकलित हैं।

इस संग्रह की कविताएँ आपका स्वस्थ मनोरंजन कर आपको हँसाएँगी, गुदगुदाएगी। साथ ही, संग्रह में संकलित पहेली कविताएँ आपसे दिमागी कसरत भी करवाएँगी। आप इन्हें पढ़कर इनका उत्तर ढूँढ़ने की कोशिश कीजिए। मुझे विश्वास है कि इन रचनाओं को पढ़कर आप बहुत आनंदित होंगे। मैं अपने मित्रों रामकरन, विनोद कुमार विक्की का बहुत शुक्रगुजार हूँ, जिनके हौसला अफ़जाई से मुझे और भी अच्छा करने की प्रेरणा एवं उत्साह मिलता रहता है।

मैं आदरणीय श्री रविन्द्र कुमार रवि का भी आभारी हूँ जिनका स्नेह मुझे मिलता रहता है तथा उन्होंने इस संग्रह की कविताओं को सँवारने में भी अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है।

हिंदी बाल साहित्य शोध संस्थान, दरभंगा के निदेशक आदरणीय डॉ. सतीश चंद्र भगत का भी कृतज्ञ हूँ, जिनकी नज़र मेरी रचनाओं पर पड़ी और मुझे इस योग्य समझा। इनकी कृपादृष्टि के फलस्वरूप ही इस संग्रह का प्रकाशन संभव हो सका।

आपका भैया

भैराज रज़ा

28.1.2020

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सुनो पेड़ जी

खड़े-खड़े हरदम रहते हो,
कुछ ना कहते, चुप रहते हो।
नीम, आम, जामुन, बहेड़ जी,
सुनो पेड़ जी, सुनो पेड़ जी!

कभी बैठकर हमसे बोलो,
दही-जलेबी खा खुश हो लो।
ललचाए से खड़े भेड़ जी,
सुनो पेड़ जी, सुनो पेड़ जी!

मिट्टी से तुम जल लेते हो,
मीठे-मीठे फल देते हो।
खाएँ बच्चे औ' अधेड़ जी,
सुनो पेड़ जी, सुनो पेड़ जी!

करो सुखी जीवन की राहें,
जो भी तुम्हें काटना चाहे,
हम उनको देंगे खदेड़ जी,
सुनो पेड़ जी, सुनो पेड़ जी!

Scanned with CamScanner

नाम बताओ

खेतों के रखवाले बनकर
रहते हरदम खड़े-खड़े।

आँधी-पानी, गरमी आए
या मौसम में नरमी आए।
हर पल ये पहरा देते हैं
तनकर सीधे अड़े-अड़े।

ना बोलें, ना हाँक लगाएँ,
नहीं किसी को डाँट लगाएँ।
इन्हें देखकर वापस भागे,
डरे जानवर बड़े-बड़े।

घास-फूँस, लकड़ी के पुतले,
नहीं गठीले, पतले-दुबले।
कपड़े पहनें फटे-पुराने,
नाम बताओ पड़े-पड़े।

Scanned with CamScanner

जाना-पहचाना हूँ

गरमी है जब खूब सताती,
सबकी प्यास बुझाता मैं।
सूखे कंठों में जादू कर,
सरस ठंड ले आता मैं।

दीखता हूँ फुटबॉल सरीखा,
फल हूँ बेमिसाल।
ऊपर से हूँ हरा-हरा मैं,
अंदर से हूँ लाल।

मीठे रस से भरा हुआ मैं,
मोहक मधुर खजाना हूँ।
जल्दी मेरा नाम बताओ,
मैं जाना-पहचाना हूँ।

Scanned with CamScanner

बिटिया लगे परी

छोटे-से बक्से में है,
खूबी भरी-भरी।

पढ़ने से जब मन ऊबे,
गीत चलाकर हम डूबे।
मन हो जाए हल्का तब,
नींद मिले गहरी।

फ़ोटो एक खिचाऊँ मैं,
घूम-घूम दिखलाऊँ मैं।
पापा ख़ुश होकर बोले,
"बिटिया लगे परी।"

सुंदर ख़ूब सजीला है,
रंग-रूप रंगीला है।
बात कराए लोगों से,
चुटीली रस भरी।

जब चाहें नेट चलाएँ,
घर बैठे रेट मँगाएँ।
कॉपी-कलम खरीदें या
सब्जी हरी-हरी।

Scanned with CamScanner

मेरे मन का फूल

रंग-बिरंगी नई किताबें,
मुझको बहुत लुभाती हैं।

कब तक खेलूँ खेल घरेलू,
नई किताबें मुझे दिला दो।
पेज़ देखने को वे अपने,
मुझको पास बुलाती हैं।

होशियार-से इक दर्जी से,
बढ़िया-सी इक ड्रेस सिला दो।
विद्यालय जाती सहेलियाँ,
मुझको बहुत सुहाती हैं।

हर बगिया में फूल खिले ज्यों,
मेरे मन का फूल खिला दो।
विद्यालय की मधुर घंटियाँ,
मुझको रोज़ बुलाती हैं।

Scanned with CamScanner

कभी-कभी जब...

बिना बीज के ये उग आएँ,
फर-फर बढ़ते जाएँ।
सनन्-सनन् जब चलें हवाएँ,
ये झूमें, लहराएँ।

एक पेड़ की काया ऐसी,
लंबी, पतली, काली।
पत्ते-फूल न इसमें लगते,
बढ़े एक बस डाली।

काटो-छाँटो, मोड़ो-तोड़ो,
फिर भी ये बढ़ जाएँ।
चेहरों की सुंदरता में ये,
चारों चाँद लगाएँ।

कभी-कभी जब ये झड़ जाएँ,
चेहरे नए बनाएँ।
सूने सिर तब लगे चाँद-से,
गंजे भी कहलाएँ।

Scanned with CamScanner

उत्तर दे दो

पतली-दुबली काया मेरी,
लंबी, लाल, लचीली।
बहुत रसीली मैं रहती हूँ,
हरदम रहती गीली।

कैंची-सी चलती हूँ हरपल,
रहती नहीं हठीली।
दूध-मलाई मुझे लुभाए,
चाटूँ चार पतीली।

खुश हो जाएँ लोग सभी,
जब बोलूँ बात चुटीली।
लेकिन बिगड़ी अगर कही तो,
बन जाऊँ जहरीली।

कच्ची अगर मिले इमली तो,
होती बहुत पनीली।
दाँतों के पिंजरे में छुपकर,
रहती हूँ शर्मीली।

प्यारी-प्यारी गुड़िया रानी,
बनो नहीं नखरीली।
झट से इसका उत्तर दे दो,
बोली बोल सुरीली।

पतंगों से प्यार

देखो-देखो उड़ी पतंग,
आसमान में खड़ी पतंग।

नीली-पीली, काली-लाल,
बेमिसाल है इनकी चाल।

ग़ज़ब सभी का रंग-रूप है,
पड़ती इन पर छाँव-धूप है।

पूँछ बाँध उड़ जाती दूर,
लेकिन माँगे ढील ज़रूर।

उत्सव की है ख़ूब बहार,
मुझे पतंगों से है प्यार।

Scanned with CamScanner

खुशबू मीठी-मीठी

रंग-बिरंगे कपड़े पाकर,
करता हा-हा, ठी-ठी।
बाग़-वनों में, घर-घर लाऊँ,
खुशबू मीठी-मीठी।

घुन-घुन, घुन-घुन मधुर सुरों में,
भौंरा गीत सुनाए।
मीठा-मीठा रस पाने को,
तितली मीत बनाए।

हिलमिल रहना आपस में तुम,
मुझ-जैसा मुस्काना।
प्यारी-सी मुस्कान सजाकर,
मेरा नाम बताना।

Scanned with CamScanner

जादू की पुड़िया

उजली-काली जो जाली है,
ख़ूबसूरती भी आली है।

बिन बोले जो कहे कहानी,
दुःख में ख़ूब बहाए पानी।

नटखट-सी गुड़िया बोलो जी,
जादू की पुड़िया खोलो जी।

कौन हमें दुनिया दिखलाए,
मन का जो दर्पण कहलाए।

Scanned with CamScanner

लार चू पड़ी

ललचाई बिल्ली खड़ी-खड़ी,
देख रही थी घड़ी-घड़ी।

आगे चूहा, पीछे चूहा,
ऊपर चूहा, नीचे चूहा।
अंदर-बाहर पाऊँ चूहा,
अगर मिले तो खाऊँ चूहा।
मौज उड़ाऊँ, नाचूँ-गाऊँ,
सोच रही थी पड़ी-पड़ी।

भूरा चूहा, काला चूहा,
अदना चूहा, आला चूहा।
मोटा चूहा, ताजा चूहा,
जल्दी-जल्दी आजा चूहा।
लार चू पड़ी बिल्ली की, जब
चुहिया देखी बड़ी-बड़ी।

Scanned with CamScanner

सुनो, सुनहरी बत्तीवाले

सुनो, सुनहरी बत्तीवाले,
किस दुनिया से आए हो?
शाम हुई झींगुर के घर पर,
लिए रोशनी आए हो।

झिलमिल-झिलमिल लटकन-जैसी,
झालर लेकर आए हो।
मुझको लगता उड़ने वाली,
लालटेन बन आए हो।

झुरमुट-झुरमुट, बाग़-बाग़ में,
चमक-दमक बिखराए हो।
दीपक जहाँ नहीं आ पाते,
वहाँ दीप बन आए हो।

लुका-छिपीकर जलते-बुझते,
कहो, कौन तुम आए हो?
नन्हा तारा बाँध-बूँधकर,
क्या दुम पर चिपकाए हो?

Scanned with CamScanner

नाम बताकर समझो

कजरारी-सी अँखियाँ मेरी,
ऐसा जादू डाले।
देख सभी मेरी चंचलता,
बदले अपनी चालें।

दो-दो लंबे और नुकीले,
सींग बहुत ही प्यारे।
लगते सुंदर मुकुट ताज-से,
इनको सभी निहारे।

उछलूँ-कूदूँ, दौड़ूँ दिन-भर,
जंगल मेरा घर है।
नाम बताकर समझो, पहला,
कक्षा में नंबर है।

Scanned with CamScanner

सर्दी की धूप

सर्दी की जब धूप सुहानी,
नरम दूब पर आई।
चमकीं ख़ूब ओस की बूँदें,
धरती भी मुस्काई।

नन्हीं चिड़िया, भौंरा, तितली,
सबने मीत बनाया।
सरसों के पीले फूलों ने,
'उसको' गले लगाया।

चितकबरे कुत्ते के संग जब,
उसका पिल्ला आया।
दौड़-दौड़ बगिया में उसने,
चक्कर एक लगाया।

धूप सुनहरी ने जादू की,
दुनिया अलग बनाई।
रोम-रोम सब पुलकित-पुलकित,
सबको धूप सुहाई।

Scanned with CamScanner

बंदर को जुकाम

बंदर को जब हुआ जुकाम,
छींका तो उछले दस आम।

बंदर समझ नहीं कुछ पाया,
उसे लगा सब कुछ थर्राया।

सोचे-समझे बिना, दौड़ता
भागा बंदर मामा।

गिरते-गिरते बचा फँसा जब
उसका लाल पजामा।

Scanned with CamScanner

उजाला लाऊँ

सूरज चाचू सो जाएँ जब,
चुपके-चुपके आऊँ।
काले-काले गाँव-शहर में,
ख़ूब उजाला लाऊँ।

नील गगन के चंदा-तारे,
नहीं दीया, ना बाती।
दही-बड़े, ना आइसक्रीम,
बिजली मुझको भाती।

बाबा एडीसन लाए थे,
मुझको इस संसार में।
मेरा नाम बताकर झटपट,
रहो सदा उजियार में।

Scanned with CamScanner

नभ का तारा

नभ की आँखों का मैं तारा,
तारों में आला हूँ।
चमचम चमकूँ-दमकूँ दिन-भर,
मैं झिलमिल ज्वाला हूँ।

अँधियारा ग़ायब हो जाता,
ज्योंही में आता हूँ।
नई-नवेली सुबह सुहानी,
रोज़-रोज़ लाता हूँ।

चंदा मामा को चमकाऊँ,
अपनी चमक दिखाकर।
फिर वे धरती को चमकाएँ,
कभी रात में आकर।

जो भी मेरा नाम बताए,
होशियार कहलाए।
मुझ-सा ही चमके-दमके वो,
खूब सफलता पाए।

Scanned with CamScanner

हिंदी बाल साहित्य शोध संस्थान
बनौली, दरभंगा (बिहार)–847428
– एक परिचय –

हिंदी बाल-साहित्य शोध संस्थान, बनौली, दरभंगा (बिहार) एक स्वैच्छिक, अव्यावसायिक साहित्यिक संस्था है। इसका उद्देश्य बाल साहित्य का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना है। इसकी स्थापना 9 फरवरी, 2017 को हुई। संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष एक भव्य समारोह में गणमान्य बाल साहित्यकारों और बच्चों की उपस्थिति में स्मृति शेष बाल साहित्यकारों के नाम से बाल साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करने वाले रचनाकारों को सम्मानित किया जाता है। खासकर, बाल साहित्यकारों द्वारा प्रकाशित बाल कविता, शिशु-गीत, बाल कहानी की पुस्तकों पर संस्थान द्वारा सम्मानित किया जाता है।

संस्थान द्वारा स्मृति शेष बाल साहित्यकार :

1. राजनारायण चौधरी स्मृति सम्मान
2. डॉ. स्वर्ण किरण स्मृति सम्मान
3. शंभु 'अगेही' स्मृति सम्मान
4. विष्णुकांत पाण्डेय स्मृति सम्मान
   के साथ-साथ (आदर्श प्रधानाध्यापक)
5. स्मृति शेष लाल बिहारी भगत शिक्षक सम्मान सेवा निवृत्त शिक्षक को दिया जाता है।

संस्थान बच्चों को उत्तम बाल साहित्य उपलब्ध कराने के लिए कृत संकल्पित और प्रतिबद्ध भी है। इसी उद्देश्य से बाल साहित्य की बाल कविता संकलन की पुस्तक डॉ. सतीश चंद्र भगत के संपादन में 2018 में 'बंदर भैया' और 2019 में 'चीं चीं चिड़िया उड़' का प्रकाशन किया गया।

Scanned with CamScanner

संस्थान से यथाशीघ्र बाल साहित्य की तीन पुस्तकें 'बिल्ली बोली म्याऊँ', 'प्रतिभा खुश हो गई' और 'मेरे मन का फूल' का प्रकाशन किया जा रहा है।

'मेरे मन का फूल' बाल कविताओं का प्यारा-सा गुलदस्ता उभरते बाल कवि मेराज रज़ा की अत्यंत सरल, सहज, रुचिकर और बाल मनोनुकूल कृति है।

मुझे विश्वास है कि मेराज रज़ा की ये बेजोड़ बाल कविताएँ बच्चे सहजता से कंठस्थ कर लेंगे। बाल पाठक मचल उठेंगे। बच्चे झूमेंगे, नाचेंगे, गाएँगे और बालक का मन-उपवन चहक उठेंगे। बच्चों के हृदय में सोए पड़े आनंद के अंकुर पुष्पित हो जाएँगे। संस्थान को जीवंतता प्रदान करने में प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. दिनेश प्रसाद साह (अध्यक्ष), सचिव अमिताभ कुमार सिन्हा साधुवाद के पात्र हैं।

बाल साहित्य के संवर्धन की दिशा में हमारे प्रयासों को आपके सहयोग और आशीर्वाद की अपेक्षा है।

डॉ. सतीश चंद्र भगत
निदेशक

Scanned with CamScanner

कवि परिचय

कृतिकार : मेराज रज़ा

पिता : मो. सिराज उद्दीन

माता : खैरूल निशा

जन्म तिथि : 6 मार्च, 1988

जन्मस्थान : ग्राम + पोस्ट–बाजिदपुर

थाना : विद्यापतिनगर

जिला : समस्तीपुर (बिहार); *पिन* : 848503

शिक्षा : स्नातक (राजनीति शास्त्र), डी.एल.एड. टीईटी उत्तीर्ण।

संप्रति : अध्यापक, राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय, ब्रह्मपुरा मोहिउद्दीननगर, समस्तीपुर (बिहार)।

लेखन : बाल-साहित्य एवं पुस्तक समीक्षा।

प्रकाशन : नंदन, बाल वाटिका, बच्चों का देश, साहित्य समीर दस्तक, संगिनी, बाल भास्कर, बाल साहित्य की धरती, बाल किलकारी, चिरैया बाल पत्रिका, प्रेरणा-अंशु, खुशबू मेरे देश की, संभावना सुरभि, उजाला, हमारा बाल प्रभात, प्रभात खबर सुरभि, डेली हिंदी मिलाप हैदराबाद, पत्रिका समाचार भोपाल, पत्रिका समाचार पत्र जबलपुर, दैनिक वर्तमान अंकुर, हम हिंदुस्तानी (USA), जय-विजय मासिक पत्रिका आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

बाल कविता संग्रहों में कविताएँ संकलित।

संपर्क सूत्र : 91137 31588

इंडिका इन्फोमीडिया
नई दिल्ली

ISBN 978-81-89450-72-4
9 788189 450724
मूल्य : 75/-